प्रकाशनार्थ

पटना, 4 दिसंबर। औषधीय पौधे: स्वच्छ वायु, स्वस्थ जीवनशैली और वन्यजीव संरक्षण के लिए प्राकृतिक समाधान विषयक व्याख्यान-श्रृंखला आज भी जारी रही। यह कार्यक्रम भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के समर्थन से तथा EIACP–CSEC के मौसम बहार, गुलशन पटेल, और सुश्री पूजा कुमारी के नेतृत्व में तारु मित्रा परिसर में आयोजित हुआ।

इस कार्यक्रम का आयोजक EIACP–CSEC था| यह एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (ADRI) से संचालित होता है। अपने संबोधन में मौसम बहार ने यह तथ्य उजागर किया कि जब हम अपने हर प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग करते हैं, तो हजारों लीटर पानी की खपत होती है। इसलिए यदि हम जल संरक्षण कर अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो हमें AI का उपयोग सोच-समझकर और संयम के साथ करना चाहिए।

गुलशन पटेल ने कहा कि बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में हरितकरण में निवेश करना अत्यंत आवश्यक कदम होगा। शहरी क्षेत्रों में तो हम यह कर ही रहे हैं | इससे उस चिंताजनक तथ्य से निपटने में मदद मिलेगी कि विश्व की 92 प्रतिशत जनसंख्या ऐसे क्षेत्रों में रहती है जहाँ वायु गुणवत्ता विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा निर्धारित मानकों से अधिक है। उन्होंने सुझाव दिया कि बिहार के विकसित होते शहरों को तरुमित्रा जैसे बायो-रिज़र्व की तर्ज पर अपने-अपने क्षेत्रों में ऐसे हरित ज़ोन विकसित करने चाहिए।

सुश्री पूजा कुमारी ने बताया कि 'इंसुलिन' और 'कैंडल-स्टिक' जैसे औषधीय पौधों का उपयोग क्रमशः मधुमेह नियंत्रण तथा दाद (Ringworm) के उपचार में किया जाता है। ये पौधे तारु मित्रा परिसर में उगाए जाते हैं और EIACP द्वारा इनका सूचीकरण किया गया है। मिथापुर क्षेत्र स्थित सेंट एम.जी. पब्लिक स्कूल और एस.आर. विद्यापीठ के लगभग 30 छात्र-छात्राओं ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

(अभिषेक प्रसाद)